दो बाल नाटक

प्रताप सहगल

चित्रांकन

दीपक दास

ISBN 978-81-237-6482-5
पहला संस्करण : 2012
पहली आवृत्ति : 2013 *(शक 1935)*
© प्रताप सहगल
Do Baal Natak *(Hindi Original)*
₹ 45.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website : www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

दो बाल नाटक

प्रताप सहगल

चित्रांकन

दीपक दास

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आओ खेलें एक कहानी

पात्र

सूत्रधार
पंद्रह-बीस बच्चे
(उम्र सात से पंद्रह साल)
अधेड़ व्यक्ति
लोमड़ी
कव्वा

दृश्य एक

[मंच पर हलका-सा प्रकाश फैलता है। मंच के अगले भाग में एक प्रकाश-वृत्त में एक बच्चा खड़ा नज़र आता है। शेष बच्चे उसके पीछे अर्द्ध-वृत्त की शक्ल में खड़े हैं। प्रकाश-वृत्त में खड़ा बच्चा इस नाटक का मुख्य पात्र है और सूत्रधार भी।]

संगीत

सूत्रधार : मैं भारत का बच्चा हूँ।
सभी बच्चे : हम भारत के बच्चे हैं
सब कहते हम सच्चे हैं।

सूत्रधार : सच्ची बात करेंगे हम
नहीं किसी से डरेंगे हम।
[एक बड़ा बच्चा अर्द्ध-वृत्त से निकलकर आता है और व्यंग्य के लहज़े में गाता है।]

पहला बच्चा : सच्ची बात करेंगे हम
नहीं किसी से डरेंगे हम।
यह तो सिर्फ कहानी है
झूठ ही सच का मानी है।

दूसरा बच्चा : झूठों को झूठ ही दिखते हैं
सच कहकर झूठ ही लिखते हैं।

पहला बच्चा : मुझको तुम झूठा कहते हो
अरे, किस दुनिया में रहते हो।

शेष बच्चे : दुनिया हमारी एक-सी है
शक्लो-सूरत नेक-सी है
सच-झूठ सिर्फ इक जामा है
फिर काहे का हंगामा है।

पहला बच्चा : नहीं-नहीं, यह बात नहीं।

तीसरा बच्चा : फिर बात है क्या?

पहला बच्चा : इसने सच मुझे कहा झूठा
दंड इसका इसे भुगतना है।

दूसरा बच्चा : दंड! हा! हा! हा! दंड! अरे, स्कूल नहीं, यह नाटक है।

सभी बच्चे : बुद्धि खुलने का फाटक है।

पहला बच्चा : नहीं, पहले फैसला होगा कि झूठा मैं हूँ या है यह?

सभी : हां, यह फैसला होना ही चाहिए।

[सभी बच्चे दो टोलियों में बँट जाते हैं। एक टोली पहले बच्चे के और दूसरी टोली दूसरे बच्चे के पक्ष में खड़ी हो जाती है। सभी के हाथों में लाठी, बल्लम, छुरियां और कट्टे आ जाते हैं। कुछ बच्चों के सिर पर टोपी, कुछ बच्चों के सिर पर साफा। और दंगल शुरू हो जाता है।

तभी वहां एक अधेड़ उम्र का आदमी गुज़रता है। वह थोड़ी देर खड़ा होकर बच्चों का दंगल देखता है। फिर जेब से सीटी निकाल रेफरी की तरह से कभी

एक टोली के पक्ष में तो कभी दूसरी टोली के पक्ष में बजाने लगता है। एक लंबी सीटी और दंगल फ्रीज़]

सूत्रधार : कौन हारा और कौन जीता?

अधेड़ : न कोई जीता, न कोई हारा
दंगल से क्या काम तुम्हारा!

[फ्रीज़ कलाकारों के हथियार फिर एक-दूसरे के सामने तन जाते हैं।]

एक टोली : हमको यह झूठा कहते हैं।

दूसरी : हम तो सच को सच कहते हैं।

सूत्रधार : झूठा! अरे, यह तो आज की पद्मश्री है।

अधेड़ : और सच्चा?

सूत्रधार : बदनामी का तमगा।

अधेड़ : वाह! वाह! बेहद लुभावनी यह परिभाषा, तुम ही मेरे देश की आशा।

सभी बच्चे : (आश्चर्य से) क्या!!

अधेड़ : बच्चो! ज़रा बच्चे बन जाओ तो मैं भी कुछ अर्ज़ करूँ।

सूत्रधार : इनायत हो।

अधेड़ : सच है क्या, यह नहीं पता
झूठ है क्या, यह नहीं पता
पाप है क्या, यह नहीं पता
पुण्य है क्या, यह नहीं पता
सही है क्या, यह नहीं पता
ग़लत है क्या, यह नहीं पता।

सूत्रधार : आप तो कुछ कन्फ्यूज़ कर रहे हैं जी!

अधेड़ : मैं अनुभव की बात कर रहा हूँ।

सूत्रधार : तो कुछ मज़ेदार बात करो न!

अधेड़ : मज़ेदार!

बच्चे : हां। मज़ेदार।

अधेड़ : तो...तो मज़ेदार बात क्या होगी...

सूत्रधार : और नहीं तो कोई कहानी-वहानी ही सुना दो।

अधेड़ : कहानी! अरे, कहानी तो सुनाती थी मेरी नानी। अब तो देखो बुद्धू बक्सा, लदा ज़माना रेडियो का, अब तो देखो बुद्धू बक्सा...डी.वी.डी. में फिल्में देखो या कंप्यूटर में खेलो खेल...गया ज़माना, हां, हां, हां, गया ज़माना, हुंह कहानी! जाओ-जाओ, टी.वी. देखो!

बच्चे : नहीं, कहानी।

अधेड़ : कंप्यूटर खेलो!

बच्चे : नहीं, कहानी।

अधेड़ : वीडियो गेम!

बच्चे : नहीं, कहानी।

अधेड़ : अच्छा, हूँऽऽ! एक कहानी मेरे बाप ने मुझे सुनाई...आ रही है याद मुझको, सुनोगे प्यारो!

[सभी बच्चे उत्साहित होकर अधेड़ व्यक्ति के इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं।]

दृश्य दो

[मंच पर एक हरा-भरा पेड़। आसपास हरियाली। कव्वे के वेश में एक बच्चा पेड़ की डाल पर बैठ जाता है। कव्वे की चोंच में रोटी है। वह गर्दन घुमाकर कभी इधर, कभी उधर देखता है। तभी पेड़ के नीचे एक लोमड़ी आकर खड़ी हो जाती है। थोड़ी देर वह ललचाई नज़रों से कव्वे की चोंच में दबी रोटी देखती है और बोल उठती है।]

लोमड़ी : कच्चे राजा! कव्वे राजा!

[कव्वा गर्दन नीचे झुकाकर लोमड़ी को देखता है।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! तुम तो कितने सुंदर हो।
एक डाल से और डाल पर,
फुदक-फुदककर उड़ते ऐसे,
जैसे मस्त कलंदर हो।

[कव्वा इधर-उधर गर्दन घुमाकर देखता रहता है। उड़ने को पंख फैलाता ही है कि—]

लोमड़ी : अरे कव्वे राजा! मेरी पूरी बात तो सुन लो।
तुम कब इस पेड़ पर आते हो
सुंदर हो तुम और चतुर भी
यह तुमको मालूम तो होगा।
पर नहीं तुम्हें मालूम कि राजा
तुम कितना मीठा गाते हो।

[तभी पार्श्व से फिल्मी गीत का यह मुखड़ा बजता है।]

मन छेड़ कोई ऐसा नग़मा।

लोमड़ी : आह! आह! गाओ राजा और मोहम्मद रफी की छुट्टी कर दो।

[कव्वा असमंजस की स्थिति में इधर-उधर देखता है।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! गाओ भी न!
सुरीला कंठ सुनाओ भी न!

[तभी कव्वा 'काँव-काँव' करने लगता है। रोटी नीचे गिरती है और लोमड़ी उठाकर भाग जाती है। कव्वा स्तंभित]

(अंधेरा)

[मंच के एक कोने में अधेड़ और बच्चे मौजूद हैं।]

बच्चे : बस! कहानी खतम?

अधेड़ : नहीं-नहीं। यह तो कहानी का अतीत है, अब इसी कहानी का वर्तमान सुनो।

[प्रकाश फिर उसी पेड़ पर केंद्रित होता है। कव्वे की चोंच में रोटी है और लोमड़ी वैसे ही नीचे आकर खड़ी हो जाती है।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! कव्वे राजा!
तुम कितने सुंदर
मस्त कलंदर
कितना मीठा कंठ तुम्हारा।
मेरे प्यारे कव्वे राजा!
एक गाना आज सुना जा।

[कव्वा गर्दन घुमाकर इधर-उधर देखता रहता है।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! गाओ न! मैं तो कितनी सदियों से तुम्हारा गाना सुनती आ रही हूँ। आज ऐसा गाओ कि किशोर कुमार की छुट्टी कर दो।

[कव्वा बड़े इत्मीनान से रोटी को चोंच से निकालकर अपने पंजे के नीचे दबा लेता है और 'काँव-काँव' करने लगता है। लोमड़ी भौंचक-सी देखती रहती है। यह दृश्य-खंड अंधेरे में डूब जाता है।]

अधेड़ : देखा बच्चो!

बच्चे : हूँ! हूँ! कव्वा भी चालाक हो गया
बदल गई यह एक कहानी
बदल गई, हां बदल गई
जो कहती थी सबकी नानी।

कुछ बच्चे : समय बदलता है।

अधेड़ : कहते तो हैं यही
कि समय बदलता है
पर सचमुच
क्या समय बदलता है

समय तो है। इक भेदक पहिया
बस चलता ही चलता है।

एक बच्चा : क्या कह रहे हैं आप
फिर कन्फ्यूज़ कर रहे हैं।

अधेड़ : नहीं, नहीं कोई कन्फ्यूज़न
बस चीज़ों की परख हो कैसे,
यही नज़रिया है–
सो समय बदलता नहीं
समय तो चलता है
समझो जैसे चलता जीवन
समझो यूँ नदिया की धार
या समझो यूँ सड़क हो लंबी
और दौड़ रही हो उस पर
बिना ब्रेक के मोटर कार।
(बच्चे साथ देते हैं)

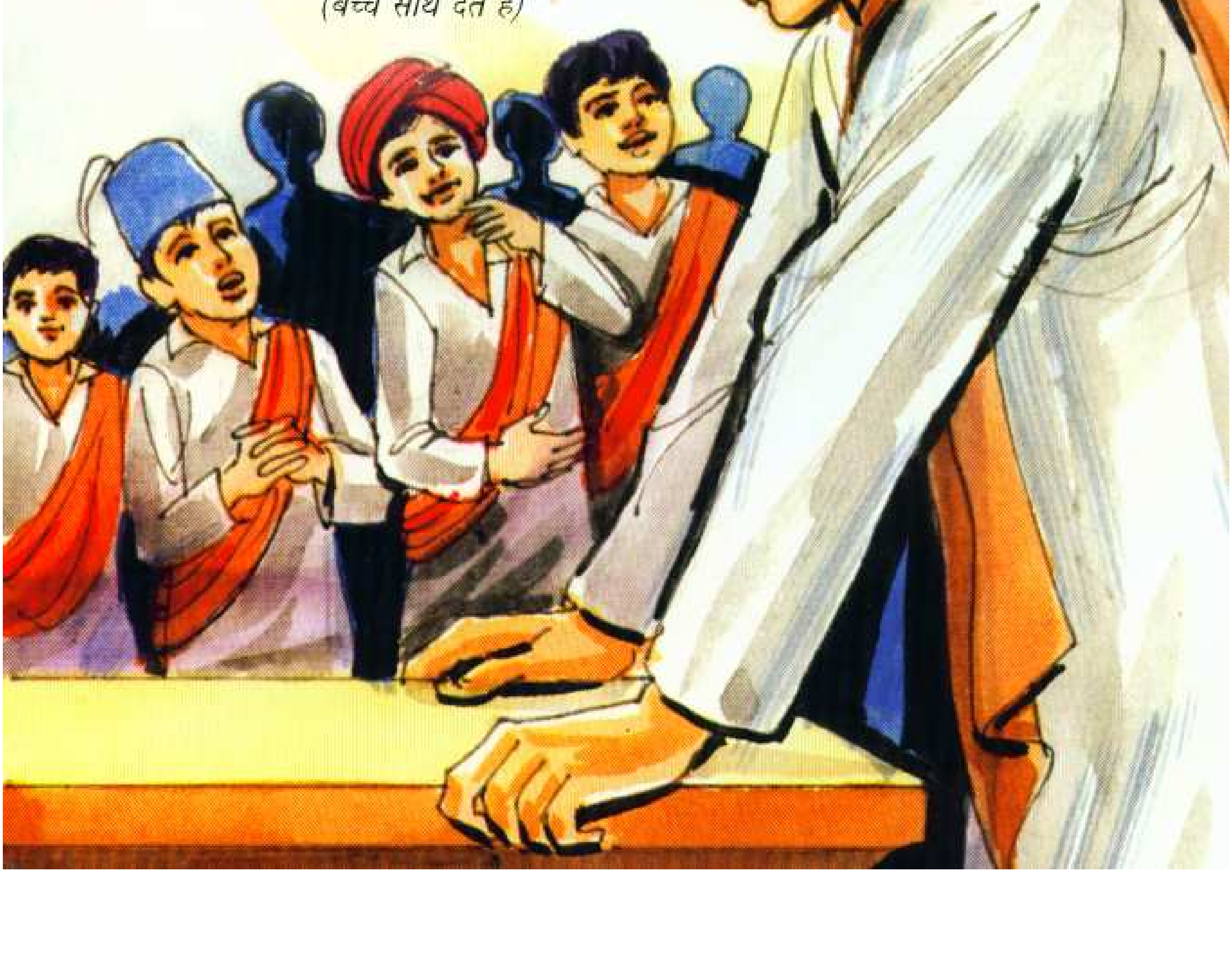

समय तो चलता है
जैसे चलता जीवन
जैसे है नदिया की धार
या कि लंबी सड़क हो
और उस पर दौड़ रही हो
बिना ब्रेक के मोटर कार।

अधेड़ : हां, अब समझे!
सो बदल जाते हैं लोग
पर नहीं बदलता जीवन
ऋतुएं आती-जाती हैं
और बदलता है मन
तो सुनो कहानी!

बच्चे : और कहानी!

अधेड़ : वही कहानी।
कल था कुछ
और आज है कुछ
कल क्या होगा
यह भी सोचें हम।
सुनो कहानी
वही कहानी
मेरे बेटे ने अपने बेटे को यों सुनाई –
अगड़म-बगड़म बम
चलें पेड़ के पास हम।

[अँधेरे में डूबा हुआ पेड़ वाला दृश्य-खंड फिर आलोकित हो उठता है। पेड़ पर कव्वा और उसकी चोंच में रोटी। नीचे खड़ी है लोमड़ी।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! कव्वे राजा!
मेरे प्यारे कव्वे राजा!
कितने सुंदर पंख तुम्हारे
चोंच तुम्हारी सबसे सुंदर

कंठ तुम्हारा बड़ा मधुर है
छेड़ो न कोई तान सुनहरी
तानसेन की छुट्टी कर दो
या छेड़ो फिर एक तराना।

[कव्वा अर्थ-भरी दृष्टि से लोमड़ी की ओर देखता है और क्षण-भर सोचने के बाद चोंच से रोटी का टुकड़ा निकालकर पंजे के नीचे दबा लेता है। धीरे-धीरे सारी रोटी स्वयं ही खा जाता है। लोमड़ी ललचाई नज़रों से हुआँ-हुआँ करती रहती

है। इत्मीनान से रोटी खाने के बाद–]

कव्वा : लोमड़ी रानी! लोमड़ी रानी!
तुम हो बड़ी सयानी
कंठ है तेरा बड़ा सुरीला
देख तो ऊपर
तेरी हुआँ-हुआँ को सुनकर
बादल का दिल डोल गया है
तैर रहा है हवा में ऐसे
जैसे पानी एक पतीले में।

[काँव...काँव...काँव...काँव करता हुआ कव्वा उड़ जाता है और लोमड़ी मायूस-सी वहीं किसी सोच में डूब जाती है।]

(दृश्य-खंड फिर अँधेरे में)

बच्चे : तुम कोई लेखक हो या जादूगर!
एक कहानी सुना रहे हो बार-बार,
बदल-बदलकर।

अधेड़ : अभी और है।

एक बच्चा : बड़ी बोर है।

कुछ बच्चे : गली-गली में उठा शोर है।

कुछ दूसरे बच्चे : लोमड़ी रानी बड़ी चोर है।

अधेड़ : रुको! रुको!
ज़रा कहानी का क्लाईमेक्स तो देखो।

बच्चे : क्लाईमेक्स?

अधेड़ : नहीं समझे!

बच्चे : अच्छा, क्लाईमेक्स!

अधेड़ : समझ गए।

[भेद-भरी खामोशी]

अधेड़ : अरे, वही चरम सीमा!

बच्चे : ठीक से बताओ न!

अधेड़ : अरे भाई! कहानी का वह बिंदु
जहाँ पूछो फिर क्या हुआ!

बच्चे : वही तो पूछ रहे हैं।

अधेड़ : अब देखो!
यही कहानी सदियों तक एक रूप में
रही थी चलती
कल से अब तक
अब से कल तक
रूप है बदला
देखो अपनी आँख से
खोल के बुद्धि के सब फाटक।

[फिर वही दृश्य-खंड आलोकित होता है। लोमड़ी बड़ी बेसब्री से पेड़ के नीचे इधर से उधर और उधर से इधर टहल रही है। थोड़ी देर बाद कव्वा चोंच में रोटी दबाए थोड़ा ऐंठा हुआ-सा आकर पेड़ की डाल पर बैठ जाता है।]

लोमड़ी : कव्वे राजा! कव्वे राजा!
इक आशा का दीप जला जा,
मधुर-मधुर इक गीत सुना जा!

[कव्वा बिना कुछ कहे उड़ जाता है। लोमड़ी उदास-सी वहीं पेड़ के नीचे बैठ जाती है। क्षण-भर बाद अपनी सोच को शब्द देती है।]

लोमड़ी : समय बदल गया है कितना
कव्वा भी होशियार हुआ
उठता है इक धुआँ-धुआँ।

[पार्श्व से समवेत आवाज़ आती है—]

हुआँ हुआँ हुआँ हुआँ !

लोमड़ी : न छीनने का दौर यह
बस बाँटने की बात है
कव्वा भी हक है माँगता
किसको कहाँ निजात है

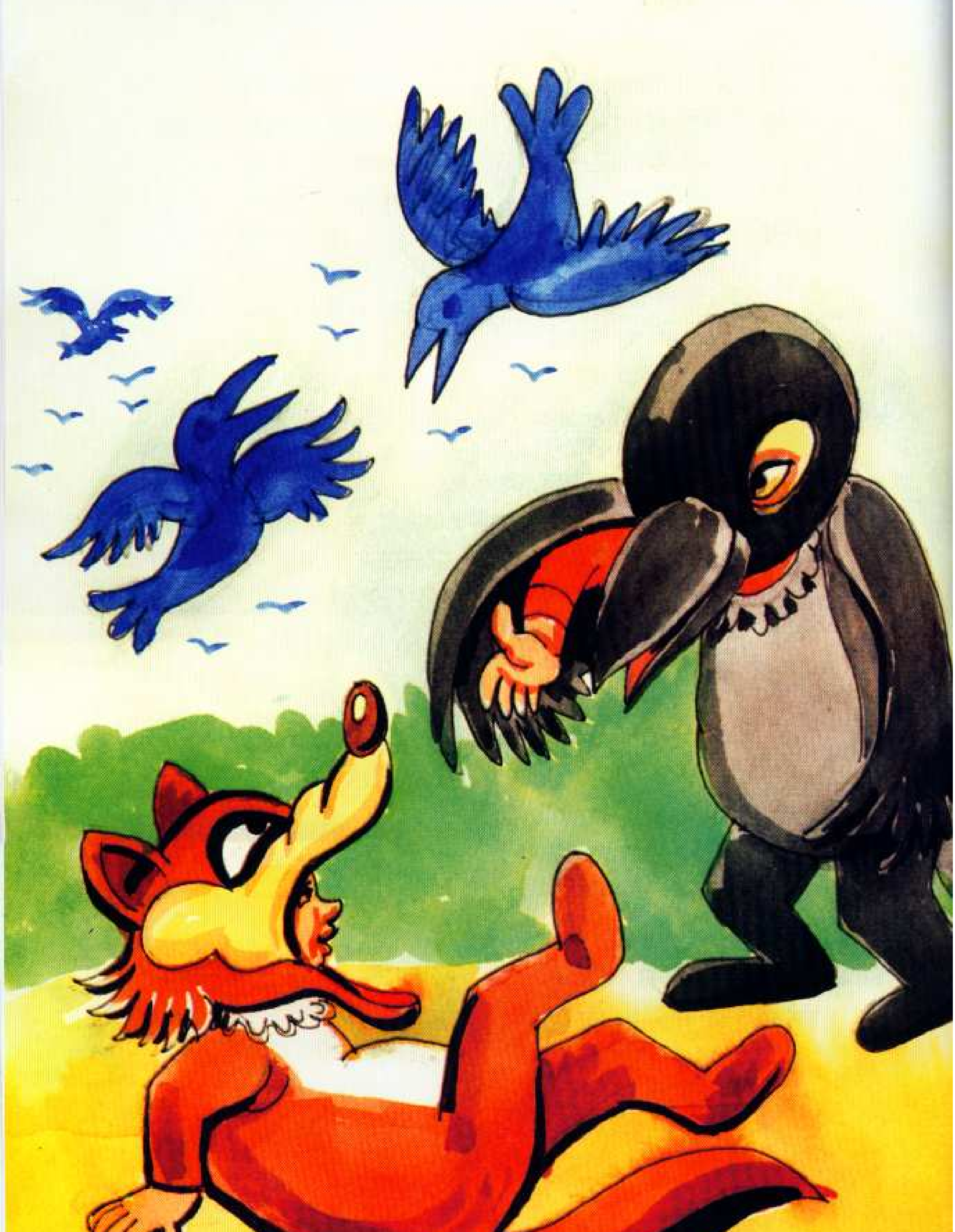

हम तो लुटे हैं राह में
सूझती न राह है
कोई सबक सिखाऊं मैं
मन में एक चाह है
पीछे अगर हूँ झाँकती
एक गहरी खाई है
और आगे देखती हूँ
एक है अंधा कुआं।

[पार्श्व से –]

हुआँ, हुआँ, हुआँ, हुआँ!

[तभी दूर से 'काँव-काँव' का समवेत स्वर सुनाई देता है। धीरे-धीरे स्वर तेज़ होता है और थोड़ी ही देर में 'काँव-काँव' करता कव्वों का दल लोमड़ी को सभी ओर से घेर लेता है। 'काँव-काँव' तेज़ होती है। पार्श्व से 'हुआँ-हुआँ' के स्वर आते हैं। लोमड़ी बचकर भागना चाहती है, लेकिन 'काँव-काँव' करते कव्वे अपनी चोंचों से लोमड़ी पर प्रहार करने लगते हैं। क्षत-विक्षत लोमड़ी गिर जाती है। कव्वे अभी भी उसे घेरकर खड़े हैं।]

(दृश्य फ्रीज़)

[बच्चों के चेहरे सहमे हुए हैं। पल-भर सन्नाटा छाया रहता है। अधेड़ व्यक्ति बच्चों के चेहरों को पढ़ता है। तभी सबसे छोटा बच्चा बोल उठता है, 'लोमड़ी मल गई।'

माहौल थोड़ा सहज होता है।]

अधेड़ : *(छोटे बच्चे को गोद में बिठाते हुए)* क्या फलक पड़ता है? मली या नहीं मली ...तो बच्चो, देखी-सुनी अजब कहानी...

बच्चे : मतलब?

अधेड़ : मतलब? सच है क्या यह नहीं पता
झूठ है क्या यह नहीं पता
पाप है क्या यह नहीं पता
पुण्य है क्या यह नहीं पता
सही है क्या यह नहीं पता

ग़लत है क्या यह नहीं पता।

बच्चे : फिर कन्फ्यूज़न!

अधेड़ : कन्फ्यूज़न की बात नहीं
यह तो सब समय का खेल है
समय समझना यही है जीवन
मूल्य बदलना बड़ा ज़रूरी।

बच्चे : सही-ग़लत की कोई कसौटी तो होगी?

अधेड़ : जो बहुतों को सुख दे
जो बहुतों को दे आराम
जिससे हित हो उनका

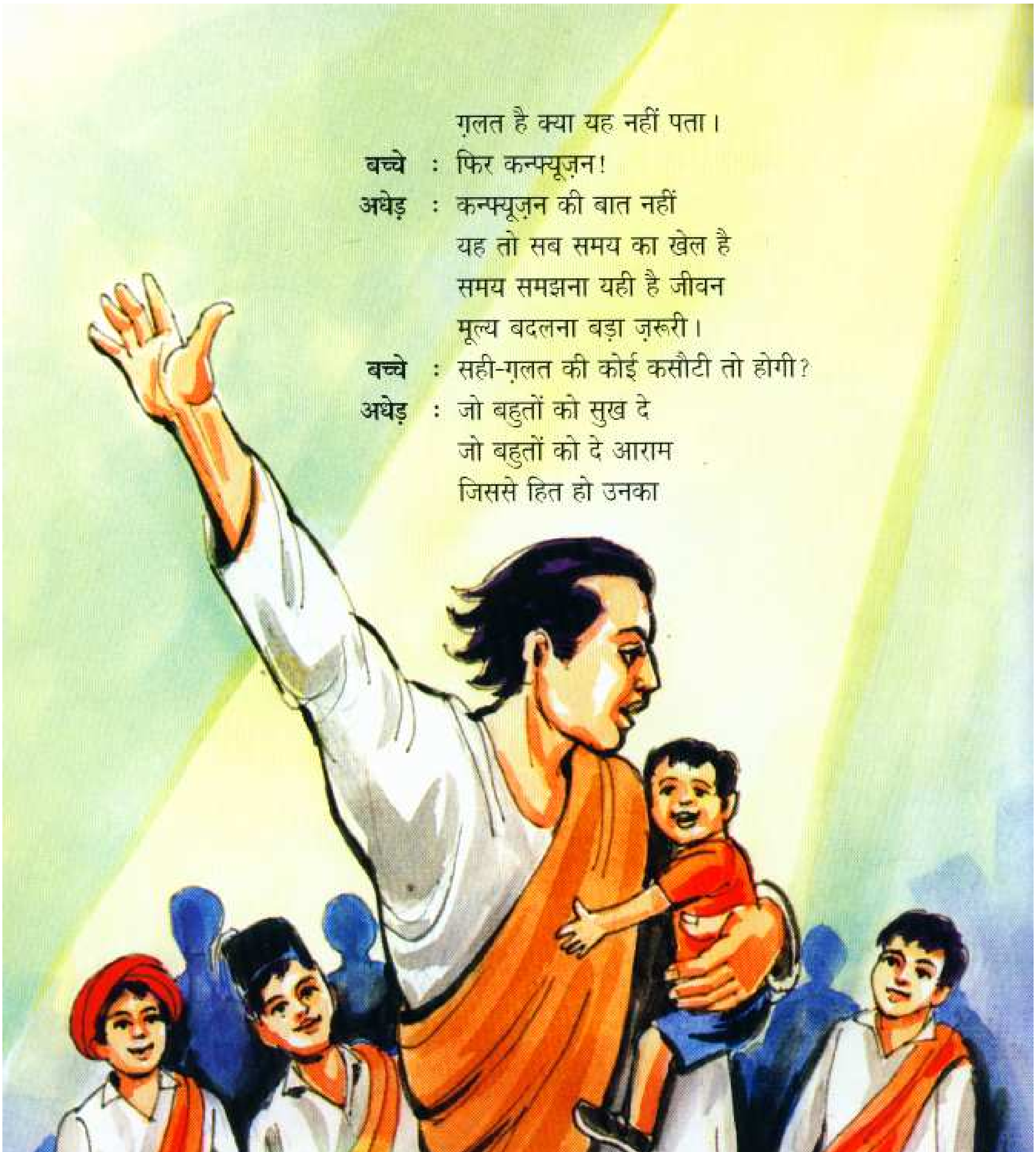

जिनके पास न रोटी-कपड़ा
न है जिनके पास मकान
चालाकी से छीना-झपटी
जो करते हैं–
या फिर फुसलाने का काम
बुरे वक़्त की बुरी हैं बातें।
हम देंगे अच्छे अंजाम
बेहतर ढंग से करेंगे काम।

बच्चे : आप भी पड़ गए अच्छे और बुरे के चक्कर में
क्या अच्छा है नहीं पता
बुरा है क्या यह नहीं पता।

अधेड़ : पकड़ा-पकड़ा, ठीक ही पकड़ा।
चलो खतम करते हैं लफड़ा
समय मुताबिक काम है करना
सही लगे जो बात कहीं भी
कहना, नहीं है डरना।

बच्चे : चलो खतम करते हैं लफड़ा
चलो खतम करते हैं लफड़ा
पर लेते हैं वचन आज हम
सही लगे जो बात कहीं भी
कहेंगे हम, हम नहीं डरेंगे
बदलेंगे हम वो कहानी
जिसे सुनाती दादी-नानी
हम अपनी कहानी आप बनेंगे
ठगी किया करती थी लोमड़
ठगा हुआ रहता था कव्वा...
स्वभाव नहीं बदलेगी लोमड़
हम कव्वे के साथ रहेंगे
सच कहने से नहीं डरेंगे।

(कहते हुए गोलाकार घूमते हैं। धीरे-धीरे दृश्य-लोप)

नकली दीवार

पात्र

इंदु
गुंजन
पुनीत
कमल
डॉक्टर

दृश्य एक

[मंच पर प्रकाश फैलता है। गुंजन, पुनीत और इंदु कमरे में हैं। घड़ी में छह बजते हैं।]

इंदु : *(बाल संवारती ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी है)* छह बज गए गुंजन, पापा आते होंगे। मैंने जो-जो कहा, समझ लिया न?

गुंजन : जी!

इंदु : और पुनीत, तुमने भी?

पुनीत : हां।

इंदु : ठीक है, अब झगड़ा-वगड़ा नहीं करना...

[कॉलबेल बजती है।]

इंदु : देखो तो पुनीत, पापा होंगे।

[पुनीत दरवाज़ा खोलता है।]

कमल : *(प्रवेश करते हुए)* अभी तैयार नहीं हुई? पहले ही देर हो गई है।

इंदु : बस, यह लो, मैं तैयार हूँ। चाय लोगे?

कमल : नहीं, चलो अब। कहीं भी पी लेंगे।

गुंजन : पापा! वो डांस स्कूल का पता किया?

कमल : भूल गया।

गुंजन : कितने दिन हो गए!

कमल : कल देखूँगा, अभी तो जाने दो।

पुनीत : पापा! मेरे टूर का क्या सोचा?

कमल : अभी कुछ नहीं।

पुनीत : दो दिन ही तो बाकी हैं।

कमल : देख लेंगे। चलो भी इंदु! देर हो रही है।

इंदु : हाँ-हाँ, अच्छा बच्चो, टेक केयर। ओ.के. थोड़ी देर हो जाएगी। घबराना नहीं...

[दोनों चले जाते हैं। क्षण-भर की खामोशी]

गुंजन : *(इंदु के ही अंदाज़ में)* घबराना नहीं...कह दिया बड़े आराम से।

पुनीत : और क्या! घबराने वाले होते तो अभी तक मर ही जाते।

गुंजन : मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता।

पुनीत : क्या?

गुंजन : यही सब – मम्मी-पापा आखिर जाते कहाँ हैं? इतने दिनों से...न कुछ बताते हैं, न...च. ..छोड़ो...अच्छा, वो नॉवल लाया?

पुनीत : हाँ, मेरे बैग में है, ले ले।

[गुंजन उठकर दूसरे कमरे में चली जाती है। पुनीत इधर-उधर टहलता है। फिर जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाने लगता है। तभी गुंजन आ जाती है। उसके हाथ में किताब है।]

गुंजन : अरे! यह कब से?

पुनीत : एक महीना हो गया यार!

गुंजन : पर पहले तो...

पुनीत : अब तेरे से क्या छुपाना!

गुंजन : यह तो बुरी बात है।

पुनीत : पता है, पता है...*(कश लेता है)* पर तू मम्मी-पापा से कुछ मत कहना।

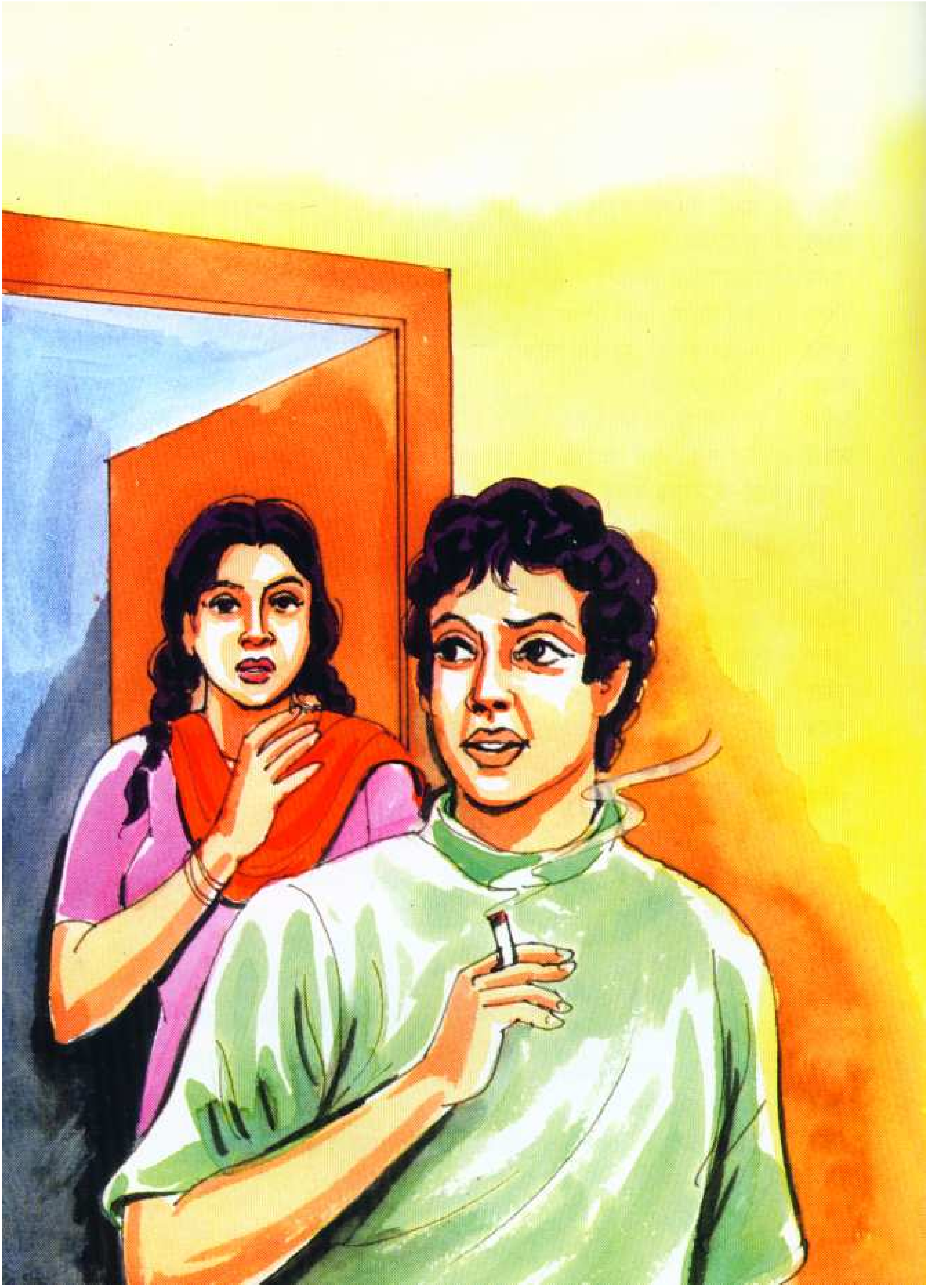

गुंजन : डरपोक!

पुनीत : डरपोक की क्या बात है?

गुंजन : फिर छिपाता क्यों है?

पुनीत : ऐसे ही। अच्छा नहीं लगेगा।

गुंजन : छुप-छुपकर पीते हो। अच्छा लगता है?

पुनीत : नहीं, जब घर में कोई नहीं होता तो इसी के सहारे वक़्त काट लेता हूँ।

गुंजन : फिल्मी डायलॉग!

पुनीत : पहले मुझे भी यही लगता था।

गुंजन : और अब?

पुनीत : अब लगता है, यही सच है।

गुंजन : तुम लड़के लोग तो ज्यों ही बड़े हुए, अपनी सोसाइटी बना लेते हो। घूमना-फिरना, पान-सिगरेट और न जाने किन-किन इल्लतों में पड़कर वक़्त गुज़ारते हो। अब वो ड्रग्स का चक्कर मत पाल लेना।

पुनीत : हाँऽऽऽ! क्या पता?

गुंजन : हम भी ऐसा ही करने लगे तो...

पुनीत : तो शायद हमारे मां-बाप कुछ सोचने पर मजबूर हों।

गुंजन : अच्छा भैया, एक बात बताओ?

पुनीत : पूछो।

[गुंजन हाथ में पकड़ी किताब के पन्ने उलटने लगती है।]

गुंजन : अब कैसे बताऊँ...तुम्हें नहीं लगता कि हम एक घर में रहकर भी जैसे एक-दूसरे से कटे-कटे रहते हैं?

पुनीत : लगता है।

गुंजन : और यह भी कि हमारे और मम्मी-पापा के बीच एक ऐसा अनजाना फासला है, जो लगातार हमें अकेला...अकेला करता चला जाता है।

पुनीत : मैं इसीलिए तो पापा से खास बात ही नहीं करता। देखती हो...ज़रा-सा कुछ पूछ लो तो बस! यह दे और यह ले। पता नहीं कहाँ-कहाँ का गुस्सा निकलता है हम पर...अपने बस का नहीं है। और एक साल की बात है, कॉलेज चला जाऊँगा तो...

गुंजन : उससे क्या होगा? तब मम्मी-पापा बदल थोड़े ही जाएँगे।

पुनीत : पर स्कूल का सड़ा हुआ माहौल तो बदल जाएगा। तुमने देखा नहीं गौरव को। कॉलेज

जाने के बाद कितनी ऐश करता है।

गुंजन : हमें तो तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता।

पुनीत : अरे, कॉलेज को अपनी लाइफ होती है। फंटास्टिक! यहाँ तो ज़रा-सा कुछ बोले...हो जाओ खड़े बेंच पर...

गुंजन : *(मुस्कराती हुई)* बहुत डाँट खाते हो!

पुनीत : मैम हमारी बात मानती ही नहीं।

गुंजन : हमें तो कुछ नहीं कहती।

पुनीत : अच्छे बच्चे। मैं तीन-चार बार जा चुका हूँ गौरव के साथ...क्या मज़े हैं यार! पीरियड में जाओ, न जाओ...कैंटीन में बैठे गप्पें मारते रहो। कहीं भी मन न लगे तो फिल्म देखने चले जाओ।

गुंजन : पर भैया, कॉलेज जाने से पहले यह सिगरेट की इल्लत छोड़ दो। जो काम छुपकर करना पड़े, वो कभी अच्छा नहीं हो सकता।

पुनीत : यह स्कूल की डिबेट नहीं है बहन जी! कोई जब घर में देखे नहीं कि हम क्या चाहते हैं...कोई हमारी सुने नहीं तो कोई न कोई रास्ता तो अपनाना पड़ेगा ही।

गुंजन : मैं जो सुनती हूँ तुम्हारी हर बात।

पुनीत : पर तुम मेरी ज़रूरतें तो पूरी नहीं कर सकतीं। मैं टूर पर जाना चाहता हूँ। आधी से ज़्यादा क्लास जा रही है। तुम दे सकती हो पैसे? दो साल से एक जैकेट के लिए कह रहा हूँ, तुम लेकर दे सकती हो? पापा का बस चले न...तो...बस...कभी-कभी जी करता है, भाग जाऊँ इस घर से।

गुंजन : दूरी का एहसास तो मुझे भी होता है, बहुत होता है; पर मैं वो सब नहीं सोचती, जो तुम सोचते हो।

पुनीत : लड़की हो न! सहना, सहना, सहना...हर बात ऐसे ही सहती रहोगी तो मर जाओगी एक दिन।

गुंजन : ठीक है, मरना है तो मर जाऊँगी, पर तुम खराब-खराब मत सोचा करो।

पुनीत : क्यों न सोचूँ? देखो, मम्मी-पापा तो आए दिन कहीं न कहीं निकले रहते हैं। हमारा कुछ भी ध्यान नहीं। मैं पूछता हूँ, हमारी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते तो हमें पैदा ही क्यों किया?

गुंजन : विद्रोही होते जा रहे हो!

पुनीत : होता जा रहा नहीं, हो गया हूँ...बस...यह लावा न जाने कब फूट पड़े। पापा से एक दिन ऐसा झगड़ा होगा, ऐसा...

गुंजन : जो भी करो, करना...पर यह सिगरेट छोड़ दो।
पुनीत : क्यों...क्यों छोड़ दूँ?
गुंजन : अपनी बहन की इत्ती-सी बात भी नहीं मान सकते!
पुनीत : अरे, सिगरेट ही है, कोई स्मैक तो नहीं।
गुंजन : मुझे नहीं अच्छा लगता।

[गुंजन नॉवल खोलकर पढ़ने लगती है। पुनीत खालीपन की परेशानी से इधर-उधर उठता-बैठता है।]

गुंजन : इतना परेशान क्यों हो रहा है?
पुनीत : क्या करूँ? घर में डैक तक तो है नहीं।
गुंजन : गौरव से ही मिल आ।
पुनीत : वह यहाँ नहीं है।
गुंजन : कहीं और चला जा।
पुनीत : तू घर में अकेली रहेगी?
गुंजन : तो क्या हुआ?
पुनीत : तू कह न पापा से।
गुंजन : क्या?
पुनीत : डैक के लिए।
गुंजन : तू क्यों नहीं कहता?
पुनीत : कहा था एक बार। डांट दिया।
गुंजन : पैसे नहीं होंगे न!
पुनीत : अपने घूमने के लिए पैसे हैं। मम्मी की नई से नई साड़ी आ सकती है। हमारे लिए पैसे नहीं हैं।
गुंजन : तुझमें गुस्सा बड़ा आ गया है।
पुनीत : तेरी तरह से महात्मा गांधी मैं नहीं हो सकता।
गुंजन : तू परेशान मत हो। थोड़े से पैसे और जमा हो जाएँ तो तुझे मैं ले दूंगी डैक।
पुनीत : तेरे पास इतने पैसे!
गुंजन : तूने नहीं किए न जमा!
पुनीत : सब खर्च हो जाते हैं।
गुंजन : सिगरेट में!
पुनीत : कुछ भी समझ ले।

गुंजन : थोड़े से तू भी जमा कर ले तो तेरी यह उदासी जल्दी ही दूर हो जाएगी।

[घड़ी में नौ बजते हैं।]

गुंजन : नौ बज गए...आज देर ज़्यादा ही हो गई है। भूख लगी हो तो चपाती बना दूँ?

पुनीत : बना दे यार! यह काम भी खत्म हो।

गुंजन : नहीं-नहीं, भूख नहीं है तो रहने दे।

पुनीत : ज़िंदा तो रहना है न! चल, बना।

[तभी कॉलबेल बजती है। दोनों की निगाहें दरवाज़े की ओर उठती हैं।]

(साथ ही धीरे-धीरे दृश्य लोप)

दृश्य दो

[डॉक्टर का क्लीनिक। कमल और इंदु भी मौजूद हैं।]

डॉक्टर : यह दवा समझ लीजिए और देते रहिए।

कमल : दवा तो देंगे ही, पर बताइए तो सही, आखिर उसे हुआ क्या है?

डॉक्टर : देखिए कमल जी, किसी और से शायद मैं इतनी बात न करता, पर मैं एक अरसे से आप लोगों का इलाज कर रहा

हूँ...इसलिए कह रहा हूँ कि उसके 'नर्वस ब्रेक डाउन' का सबसे बड़ा कारण हैं आप।

कमल : मैं!

डॉक्टर : मेरा मतलब आप दोनों से है।

इंदु : लेकिन डॉक्टर साहब! हमने कभी उसे झिड़का तक नहीं।

डॉक्टर : आप मेरी ही बात की ताईद कर रही हैं।

कमल : वो ठीक तो हो जाएगी न?

डॉक्टर : उम्मीद तो यही है।

कमल : हमसे कहाँ चूक हुई है, हमें पता तो चले।

डॉक्टर : मैंने गुंजन से लंबी बात की है और मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि आप लोग उसे अपना वक़्त नहीं देते या बहुत ही कम देते हैं। वह खुद को एलियेनेटिड यानी अलग-थलग महसूस करती है।

कमल : लेकिन क्यों...हमने तो हमेशा उसकी हर ज़रूरत पूरी की है।

डॉक्टर : आपने उसे खाने को दिया, कपड़ा दिया, पढ़ाई का इंतज़ाम कर दिया...यही न...अकसर मां-बाप सोचते हैं, बस, यह कर दिया; और क्या चाहिए बच्चों को?...पर इन सब ज़रूरतों से भी बड़ी एक ज़रूरत होती है अपनापन। किशोर उम्र के बच्चों के लिए ज़रा ज़्यादा। यही वह उम्र है, जब बच्चा किसी एक पर अपना पूरा हक जमा लेना चाहता है। गुंजन की समस्या यही है। अब वह घर से बाहर होती तो कहीं किसी से दोस्ती गांठ लेती। तब दूसरी तरह की दिक्कतें हो सकती थीं। पर यह नहीं। गुंजन को यही लगता है कि मम्मी-पापा अपने तो हैं, पर अपने नहीं हैं।

इंदु : मैं तो हमेशा उसका ध्यान रखती हूँ।

डॉक्टर : मेरे अंदाज़ से उसके नर्वस ब्रेक डाउन का एक बड़ा कारण कमल हैं।

कमल : *(हैरानी से)* मैं?

डॉक्टर : हाँ! वह आपसे बेहद प्यार करती हैं और वैसा ही प्यार पापा से न मिलने की वजह से वह एक...एक 'इमोशनल वैक्यूम' में जीने लगती है...बहुत सेंसेटिव है...

कमल : लेकिन डॉक्टर साहब! भाई-बहन दोनों एक-दूसरे का सुख-दुःख बांट तो लेते हैं।

डॉक्टर : हाँ, बांट सकते हैं; लेकिन वह कहीं पुनीत के भविष्य को लेकर भी आशंकित है और आप हैं कि उसे समझने का वक़्त नहीं निकालते। और पुनीत भी गुंजन के मन की पीड़ा तक पहुंच नहीं पाता।

कमल : अब इसका हल क्या है?

डॉक्टर : आइए, घर चलते हैं...उसी से बात करते हैं।

(दृश्य-लोप)

दृश्य तीन

[पहले वाला कमरा। प्रकाश उभरता है। पुनीत एक ओर बैठा सिगरेट के कश खींच रहा है। कॉलबेल बजती है। पुनीत हड़बड़ाकर उठता है। कमरे में फैले सिगरेट के धुएं को हाथों से इधर-उधर करता है। घंटी फिर बजती है। वह हड़बड़ाहट में सिगरेट एक ओर फेंककर दरवाज़ा खोलता है।]

पुनीत : *(हकलाता-सा)* आ...आ...प...डॉक्टर...अंकल!...आ... आप...आइए...!

कमल : *(आशंकित-सा)* यह सिगरेट की बू!

पुनीत : हाँ-हाँ, वो परदेशी अंकल आए थे। अभी गए हैं।

डॉक्टर : पुनीत! झूठ बोलकर तुम अपने पर ही आत्मग्लानि का बोझ लाद रहे हो।

पुनीत : नहीं अंकल!

डॉक्टर : पुनीत! तुम्हें मैं तब से जानता हूँ, जब तुम बहुत छोटे थे। तुम्हारे पापा शायद संकोच के मारे कुछ नहीं कह रहे। सिगरेट पीना चाहते हो? मैं अभी मंगवा देता हूँ...

पुनीत : नहीं अंकल!

डॉक्टर : देखो बेटा, तुमने अभी तो ज़िंदगी की शुरुआत भी नहीं की। यह मत सोचना, उपदेश दे रहा हूँ, सिर्फ तुम्हें आगाह कर रहा हूँ...बाकी फैसले तो आखिर तुम्हें खुद ही लेने हैं...अच्छा बैठो...कमल, बैठो! इंदु जी, गुंजन को दवा दे दीजिए।

[इदुं डॉक्टर से दवा लेकर अंदर चली जाती है।]

डॉक्टर : *(पुनीत से)* अच्छा, सच-सच बता दो, सिगरेट क्यों पीते हो?

कमल : क्या पुनीत...सचमुच...

डॉक्टर : चौंको मत कमल, दो मिनट मुझे बात करने दो...। बता दो पुनीत, क्यों पीते हो?

पुनीत : जी...बस...यूँ ही...

डॉक्टर : यूँ ही कोई काम नहीं होता। *(उसके पास पड़ी किताब उठाकर)* तुम तो इतनी बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ते हो। तुम्हें यह समझाने की ज़रूरत नहीं कि हर काम, हर एक्शन के पीछे तर्क ज़रूर होता है।

[पुनीत खामोश]

डॉक्टर : तो मैं यह मान लूँ कि यह सब पढ़ने का कोई अर्थ नहीं।

पुनीत : जी, सुना है, इससे दिमाग का तनाव खत्म हो जाता है।

कमल : *(भड़ककर)* तनाव! तुम्हें कैसा तनाव? यह उम्र और तनाव! नॉनसेंस!

डॉक्टर : नहीं कमल! यह नॉनसेंस नहीं है। हाँ तो पुनीत! तुमने सिगरेट के कश के साथ तनाव खत्म होता महसूस किया?

पुनीत : होता तो कुछ भी नहीं।

डॉक्टर : फिर...

पुनीत : बस, वक़्त कट जाता है।

डॉक्टर : यह भी एक तरह का फोबिया है। असल में यह उम्र सुनी-सुनाई बातों को अनुभव के स्तर पर जीने की होती है। इन्होंने सुन रखा है, सिगरेट पीने से तनाव खत्म होता है, वक़्त कट जाता है, वगैरह-वगैरह, तो पुनीत ने सोचा कि उसे भी यही करना चाहिए, पर करने के बाद उसने यह भी महसूस किया कि ये तो बेकार की बातें हैं। किया या नहीं...सच बताना...

पुनीत : किया...

डॉक्टर : तो तुम मेरे कहने से नहीं...अपने अनुभव के आधार पर आज के बाद सिगरेट को हाथ नहीं लगाओगे... ठीक...

पुनीत : ठीक।

[तभी गुंजन अस्त-व्यस्त-सी मंच पर आती है। उसे देखते ही डॉक्टर अपनी बातचीत छोड़कर गुंजन की ओर लपकता है।]

डॉक्टर : अरे गुंजन बेटे! सोए नहीं?

गुंजन : नींद नहीं आती। मेरी नसें लेटे-लेटे फटने लगती हैं। सिर चकराता है...दिल डूबता है। मम्मी, मैं मर जाऊंगी। मैं मर जाऊंगी।

इंदु : नहीं बेटे! ऐसा नहीं कहते!

गुंजन : *(विक्षिप्त-सी)* वो जा रहा है...पुनीत जा रहा है मम्मी...पुनीत धुएँ के साथ उड़ रहा है मम्मी! मैं कुछ नहीं कर सकती...रोको...पुनीत...

[पुनीत भी उठकर पास आता है।]

पुनीत : मैं यहाँ हूँ गुंजन! तुम ठीक हो जाओ। मैं कहीं नहीं जा रहा।

[क्षण-भर के लिए गुंजन बैठ जाती है। इंदु उसका सिर सहलाती है। वह फिर विक्षिप्त-सी बोलने लगती है।]

गुंजन : सिगरेट...धुआँ...ड्रग्स...स्मैक...उसे रोको मम्मी...पिन...गुब्बारे...पापा...नेहा मर गई...

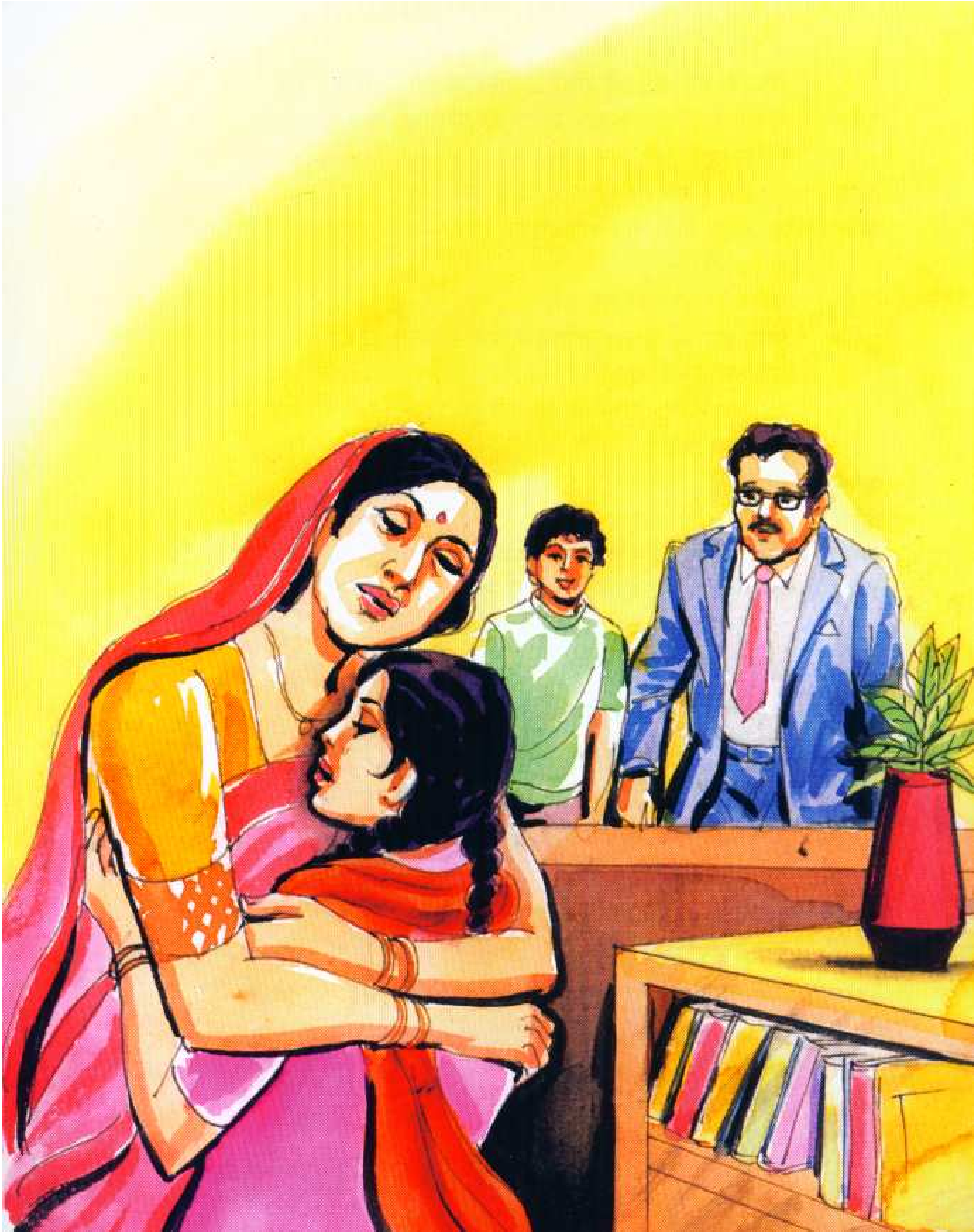

स्मैक से मर गई...उसे रोको ...पुनीत जा रहा है, मम्मी...पुनीऽऽत!

पुनीत : मैं यहाँ हूँ... । *(उसके गाल पर हलकी-सी चपत लगाता है)* गुंजन! मैं हूँ। यह देख, यहीं हूँ, तेरे पास...चल, लेट जा।

डॉक्टर : *(पुनीत से)* गुंजन को दवा दे दी थी न?

पुनीत : हाँ अंकल, दे दी थी। आप देख रहे हैं गुंजन की हालत। एक दिन मेरी भी यही हालत हो जाएगी।

इंदु : नहीं बेटे! ऐसे बातें मत करो।

पुनीत : मम्मी-पापा को फुरसत नहीं कि वे थोड़ा-सा वक़्त हमें दे सकें। रोज़ शाम को हमें अकेला छोड़कर निकल जाते हैं। मैं तो फिर भी अपने दोस्तों के साथ बाहर निकल जाता हूँ और यह गुंजन...घर में अकेली पड़ी रहती है। ऐसे में नर्वस ब्रेक डाउन नहीं होगा तो और क्या होगा?

कमल : पुनीत!

डॉक्टर : इसे कहने दो कमल!

पुनीत : जब मेरी दुनिया में पापा नहीं, मम्मी भी नहीं, तो फिर मेरी दुनिया कहीं तो बनेगी।

कमल : छोटे मुँह से बड़ी बात अच्छी नहीं लगती।

पुनीत : हाँ, आपको लगता है यह, पर आप महसूस नहीं कर सकते, सन्नाटे का दमघोंटू हाथ, जिसका वास्ता सिर्फ हमसे है।

[कमल कुछ कहने लगता है कि इंदु बोल पड़ती है।]

इंदु : बहस करने से कुछ नहीं होगा कमल!

गुंजन : पुनीत झूठ बोलता है, पापा अच्छे हैं... । *(गुंजन कमल के पास जाती है। कमल की आंखों में देखती है और अपना सिर उसके कंधे पर टिका देती है।)* पापा अच्छे हैं। *(कहते हुए सुबकने लगती है।)*

[गुंजन और ज़ोर से सुबकने लगती है। कमल डॉक्टर की ओर देखता है। डॉक्टर संकेत से समझाता है, 'रोने दो।' थोड़ी देर रोकर वह व्यवस्थित हो जाती है। कमल उसे एक ओर बिठा देता है। इंदु उसके पास बैठ जाती है। दूसरी ओर पुनीत बैठ जाता है।]

डॉक्टर : दैट इज़ लाइक ए गुड गर्ल! कैसा लग रहा है?

गुंजन : अच्छा लग रहा है। एक बोझ था जो मन से उतर गया।

कमल : मुझसे बहुत नाराज़ है?

गुंजन : हाँ।

डॉक्टर : मुझे लगता है, गुंजन ने दिल की बात आँसुओं से कह दी है। एक डॉक्टर और एक दोस्त के नाते आप लोग मुझे इजाज़त दें तो कुछ कहूँ...?

[कमल स्वीकृति में सिर हिलाता है।]

डॉक्टर : असल में यह 'एलियेनेशन' की समस्या बड़े शहरों में रहने वाले उच्च-मध्यवर्गीय या उच्च वर्ग के लोगों की है, जिसका थोड़ा असर मध्य वर्ग पर भी पड़ा है। इस केस में एक अहम बात यह भी लगती है कि गुंजन ने पुनीत के प्रति मां-बाप की भूमिका भी अपने ऊपर ओढ़ ली...अब यह कोई एक गुंजन या एक पुनीत की समस्या नहीं है।

पुनीत : डॉक्टर अंकल, आप पता नहीं कैसे-कैसे भारी शब्दों से सारी बात उलझा देते हैं। ज़रा-सी बात यह है कि हमारे और मम्मी-पापा के बीच एक दीवार आ गई है।

डॉक्टर : करेक्ट! लेकिन यह दीवार नकली है।

पुनीत : नकली?

डॉक्टर : नहीं समझे? इस बारे में तुम अपने पापा-मम्मी से बात करो—समझ जाओगे। क्लीनिक पर मेरे मरीज़ मेरी राह देखते होंगे...अब कोई टेंशन तो नहीं है?

पुनीत : *(असमंजस की-सी स्थिति में)* नहीं।

डॉक्टर : तो आज से सिगरेट बंद?

पुनीत : बंद।

डॉक्टर : वायदा?

पुनीत : पक्का वायदा।

डॉक्टर : ओ.के.! मै। चलता हूं गुंजन! रात को एक और गोली ज़रूर ले लेना और कल मेरे पास आना।

[डॉक्टर को सभी विदा करते हैं। कमल खामोश बैठ जाता है।]

गुंजन : पापा! आप उदास हैं?

कमल : हूँ...हाँ...नहीं बेटे, ऐसे ही कुछ सोच रहा था।

पुनीत : हमें भी तो बताइए न!

गुंजन : हाँ पापा! आप हमें सब कुछ बताइए...वो सब जो आपने हमसे छुपा रखा है।

कमल : आओ बेटा, आओ...दोनों मेरे पास बैठो...इंदु, तुम भी आओ...तुम लोग यही जानना चाहते हो न कि हम दोनों शाम को कहाँ निकल जाते हैं?

पुनीत : हाँ।

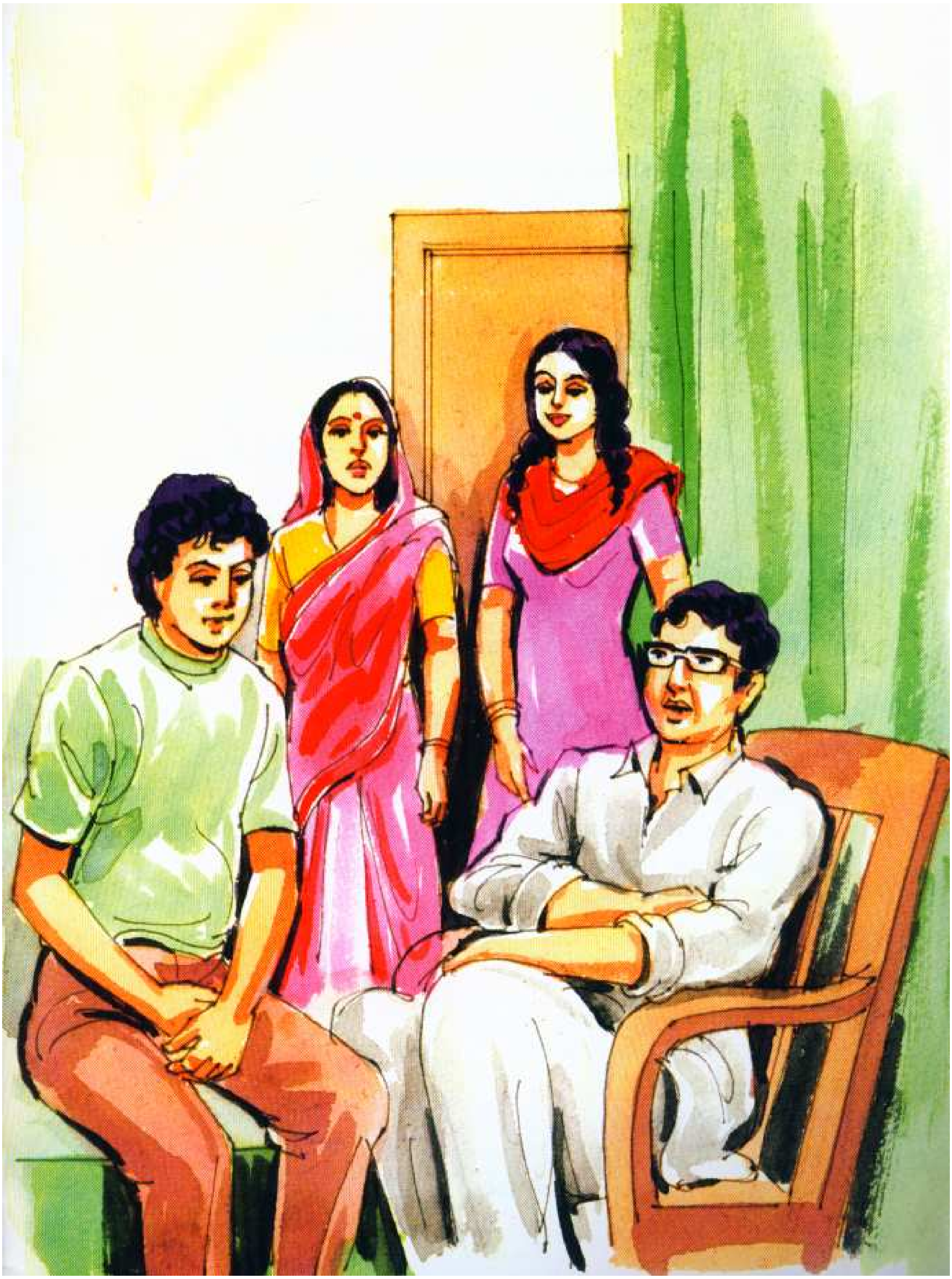

कमल : बेटा, हम दोनों पिछले दस महीनों से एक फ्लैट खरीदने के चक्कर में घूम रहे हैं। पैसा...जगह...सुविधाएँ...हर बात का ध्यान रखना पड़ता है...तो देर लग रही है।

पुनीत : फ्लैट! पर ऐसा तो हमेशा होता है। अब भी और पहले भी।

कमल : तब भी किसी न किसी ज़रूरत के लिए ही हम भटकते रहे हैं।

पुनीत : इतनी बड़ी बात आपने हमें क्यों नहीं बताई?

इंदु : बेटे पुनीत! तुम्हारे पापा तुम दोनों को बेहद प्यार करते हैं, इसीलिए तुम्हें हर चिंता से दूर रखना चाहते हैं...पर अफसोस...तुम लोगों ने अपने पापा को बहुत ग़लत समझा।

पुनीत : लेकिन मम्मी! आपने भी हमें ठीक नहीं समझा। पापा! आपने अपने बेटे को इतना कमज़ोर कैसे मान लिया?

गुंजन : हाँ, और मुझे भी।

कमल : यह मां-बाप की मजबूरी होती है।

पुनीत : मजबूरी!

कमल : तुम नहीं समझ सकते एक पिता के मन का दर्द...एक मां की विवशता।

पुनीत : डॉक्टर अंकल ठीक ही कहते थे।

कमल : क्या?

पुनीत : यही कि हमारे बीच एक नकली दीवार उठ खड़ी हुई थी...

गुंजन : वो कांटेदार दीवार...

पुनीत : वो दीवार जिसकी बुनियाद है – हवा में तैरता हुआ एक शक।

इंदु : कोई भी नीड़ टूटता है तो चिड़िया सबसे ज़्यादा रोती है।

कमल : लेकिन यहाँ कोई नीड़ नहीं टूटा है इंदु! हम सभी उस दीवार के शिकार हैं, जो है ही नहीं...दरअसल हमसे ग़लती यह हुई कि हमने इन बच्चों को अपने दुःख-सुख, अपनी सोच-समझ का साझीदार नहीं बनाया।

इंदु : इसी से खड़ी हो गई हमारे बीच एक दीवार।

पुनीत : और वह भी बेबुनियाद।

कमल : वह...वह टूट चुकी है।

गुंजन : पापा! मम्मी!! आप कहीं भी जाइए, बस। हमें ज़रा-सा संकेत दे दीजिए...और हो सके तो कभी हमें भी साथ ले चलिए।

पुनीत : दोस्तों की तरह।

गुंजन : कभी दोस्तों के साथ।

इंदु : ग़लती हमारी ही थी, जो हम इन्हें बच्चा समझकर दुनियादारी से दूर करते रहे। यह भूल गए कि आखिर कल इन्हें ही तो सब संभालना है।

पुनीत : यही तो हम कहते हैं, हमें ज़िम्मेदारियों से दूर मत रखिए। हमारे कंधे मज़बूत हैं और पाँव जानदार।

[प्रकाश-वृत्त केवल पुनीत पर केंद्रित होता है।]

पुनीत : *(दर्शकों की ओर मुंह करके)* हाँ, हमारे कंधों पर भार डालिए...हमारे पांवों को भागने दीजिए...पलने दीजिए हमारी आंखों में चमकीला भविष्य और देखने दीजिए हमें उसका सुनहरा सपना...।

गुंजन : *(प्रकाश-वृत्त गुंजन पर)* पर क्या मेरे पांव फिर पहले की तरह भाग सकेंगे? क्या मैं भी उठा सकूँगी ज़िम्मेदारियों का बोझ? क्या मेरे लिए भी होगा इस दीवार का अंत?

(इसी संवाद के साथ धीरे-धीरे दृश्य लोप)

NBT INDIA

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

₹ 45.00
ISBN 812376482-0
9788123764825
13140309